Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

वाल्मीकिरामीयं महाकाव्य में बालोपदेश

अराधिका
शोधच्छात्रा
संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 3, Issue 6
Page Number: 17-22
Publication Issue :
November-December-2020

Article History
Accepted : 01 Nov 2020
Published : 28 Nov 2020

ABSTRACT

सारांश – वाल्मीकिरामीयं में वर्णित बालोपदेश की भाषा अत्यन्त सरल व सहज है तथा सीधे हृदय को स्पर्श करने वाली है। त्याग, तपस्या, धैर्य, क्षमा, अस्तेय आदि गुणों का समावेश एक सत्पुरुष में अवश्य होना चाहिए। एक उत्तम बालक के गुणों का वर्णन कवि ने बालोपदेश में किया है। भारतवर्ष के प्रति कर्तव्य और दायित्व निर्वहन की शिक्षा सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत है। सदाचार, नैतिकता और राष्ट्रवादी चेतना का संचार तथा स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा सदा अनुकरणीय है। कुशलव द्वारा दिया गया बालोपदेश जनमानस को हृदयासिक्त और मन को अतिरंजित करता है।

मुख्य शब्द – वाल्मीकिरामीयं, बालोपदेश, भाषा, महाकाव्य, सदाचार, नैतिकता, राष्ट्रवादी।

''धन यदि गया, गया नहिं कुछ भी,
स्वास्थ्य गये कुछ जाता है।
सदाचार यदि गया मनुज का,
सब कुछ ही लुट जाता है।''

सदाचार मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ गुण है, सभी धर्मों का सार है। सदाचार के समक्ष धन और स्वास्थ्य दोनों ही तुच्छ है। जीवन में सदाचार ही सर्वोत्तम और सभी उन्नतियों का आधार है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

डॉ0 रहस बिहारी द्विवेदी विरचित वाल्मीकिरामीयं महाकाव्य में वर्णित बालोपदेश भी इन्हीं सदाचार के गुणों का भण्डार है। विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा में सर्वप्रमुख यही गुण है, जो इन उपदेशों में भरी हुई हैं। शिक्षा क्रम में ऐसे उपदेशों का स्थान सर्वप्रथम होना चाहिए।

वाल्मीकिरामीयं के चतुर्थ सर्ग में स्वतंत्र मात्रिक छन्द्व में कवि ने बालोपदेश का मर्मस्पर्शी एवं हृदयाग्राही चित्रण किया है। लवणासुर का वध कर वापस लौटे शत्रुघ्न जब वाल्मीकि आश्रम पहुंचते हैं, तब अत्यन्त मधुर स्वर में सीता पुत्र कुशलव द्वारा बालोपदेश गान इस प्रकार किया जा रहा था–

जननी जनकगुरुणामाज्ञा बालाः! सततं ध्यातव्या।
अच्छो बालोऽसीति सर्वदा तव प्रशंसा भवितव्या।।[1]

अर्थात् अच्छा बालक वही है, जो हमेशा माता–पिता और गुरुओं की आज्ञा का पालन करता है। ऐसा बालक प्रशंसा का पात्र होता है। उपनिषदों में वर्णित मातृदेवो भव[2], पितृदेवो भव और आचार्य देवो भव का भी यही चरितार्थ है, कि माता–पिता और गुरूओं की आज्ञा शिरोधार्य होनी चाहिए।

कवि ने बालोपदेश का वर्णन किया है कि शाम को जल्दी शयन करना और प्रातः काल अतिशीघ्र उठना चाहिए, ऐसा करना स्वास्थ्य के लिए भी हितकारी एवं लाभप्रद होता है। नित्य प्रति ब्रश करने के बाद ही नाश्ता करना चाहिए।[3] प्रातः शीघ्र उठने के पश्चात् नित्य कर्म से निवृत्त होकर पठन–पाठन कार्य में लग जाना चाहिए। एक अच्छे विद्यार्थी का यही विशिष्ट गुण है कि वह शिक्षक द्वारा प्रदत्त प्रत्येक कार्य को समयानुसार पूर्ण करके ही विद्यालय जायें–

प्रातर्देववन्दनं कृत्वा पाठ्यपुस्तकं पठनीयम्।
विद्यालये प्रदत्तं सर्वं स्व गृहकार्यं करणीयम्।।[4]

श्रेष्ठजनों, बन्धु–बान्धवों के आदेशों और उपदेशों का पालन करना एक अच्छे बालक का कर्त्तव्य है। बिना बताये कहीं भी जाना नहीं चाहिए। जहाँ कहीं भी जाना हो माता की अनुमति लेकर ही जाना चाहिए।[5] कवि ने इस ओर इंगित किया हैं कि पिता भरण–पोषण के कार्य हेतु घर से बाहर रहते हैं और माता घर पर ही रहती हैं, अतः घर से बाहर कहीं भी जाते समय बच्चों को अपनी माँ की आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए–

श्रेष्ठजनानामुपदेशानां सदा पालनं करणीयम्।
मातुरनुमतिं बिना कुत्रचित् त्वया न गमनं करणीयम्।।

किसी भी श्रेष्ठजनों अथवा अपने से बड़े व्यक्ति के आने पर यदि हम आसन पर बैठे हैं, तो हमें अपना आसन तज देना चाहिए।[6] और उन्हें सर्वप्रथम आसन पर बैठाना चाहिए। यह भी शिष्टाचार का एक पाठ है। यह बच्चों के लिए ही नहीं अपितु हम सभी के लिए अनुकरणीय है। बाजार की खुली हुई धूल घूसरित चीजों का सेवन नहीं करना

चाहिए, केवल घर पर बनी चीजों को खाना चाहिए, जिससे स्वास्थ्य भी उत्तम हो और परिवार में एक साथ बैठकर खाने से सौह्यर्द और प्रेमभाव सुदृढ़ होता है।

बालोपदेश की अग्रिम पंक्ति में कवि ने कहा है कि–

यो न परिचितस्तेन प्रदत्तं वस्तु न किंचिद् ग्रहणीयम्।
अज्ञातेन जनेनसहापि क्वापि न गमनं करणीयम्।।[7]

अर्थात् किसी अपरिचित अथवा अनजान व्यक्ति से कभी भी कोई चीज ग्रहण नहीं करनी चाहिए, न ही उसके कहने पर कहीं भी किसी भी स्थान पर नहीं जाना चाहिए। ऐसा करने से किसी भी अप्रिय घटना घटित होने से बचाया जा सकता है। रास्ते में पड़ी या फेंकी अथवा गिरी हुई वस्तु को कभी भी छूना नहीं चाहिए, न ही घर लाना चाहिए। लावारिस वस्तु को देखकर उसकी तत्काल सूचना थाने में देना चाहिए।[8] ताकि पुलिस द्वारा उसकी जाँच–पड़ताल कर यदि विस्फोटक पदार्थ हो, तो उसको यथाशीघ्र निष्प्रभावी किया जा सके और अनहोनी होने से बचाया जा सकें।

'मार्गे सदा सावधानेन वामभगतश्चलनीयम्।
सायं किंचित् क्रीड़ा कृत्वा पुनरध्ययनं करणीयम्।।''[9]

मार्ग में हमेशा अपनी बाँयी ओर चलना चाहिए, परन्तु सावधान होकर ही आगे बढ़ना चाहिए। कहीं भी जाते समय अपनी बाँयी ओर चारों ओर देखकर कदम रखना चाहिए। सायंकाल क्रीड़ा के पश्चात् अध्ययन करना चाहिए। कवि ने संकेत किया है कि अध्ययन कार्य नित्य प्रति करना चाहिए, तभी ज्ञान परिपुष्ट और स्थायी होता है। इसके साथ ही हम पर रक्षा का दायित्व होता है–

मातुर्गवां राष्ट्रभूभामातुर्दुग्धान्नैः पुष्टोऽसि त्वम्।
अत एतासां रक्षको भवेस्तथा कृतज्ञो भूयास्त्वम्।।[10]
कुलं च राष्ट्रं स्वं सम्मान्यं भावोऽयं त्वयि सदा भवेत्।
येन कुलं राष्ट्रं समुज्ज्वलं सर्वश्रेष्ठं सदा लसेत्।।[11]

कवि का तात्पर्य है कि कर्त्तव्यों के साथ ही साथ हमें कुछ दायित्वों का भी निर्वहन करना चाहिए यथा माता, गाय और राष्ट्र इन सभी की रक्षा करना चाहिए और उनके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए। क्योंकि माता हमें जन्म देकर और उत्कृष्ट संस्कारों के द्वारा पोषित करती है, गाय दूध देकर पुष्ट करती है और धरती हमें अन्न देकर जीवन प्रदान करती है, इन सभी के प्रति हमें कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहिए।

अपने कुल और राष्ट्र की प्रगति में सहायक बनना चाहिए। नयी–नयी खोजों, आविष्कारों और नवाचारों के माध्यम से अपने राष्ट्र को उज्ज्वल बनाने का प्रयास करना चाहिए राष्ट्र की प्रगति का उत्तरदायित्व भी हमारा है। माता–पिता और गुरू के प्रदत्त ज्ञान का वर्णन भी कवि ने किया है–

ऊर्जा मातुश्चरणस्पर्शे पितुः पादयोः सन्मार्गः।

ज्ञानं गुरुपादयोर्वर्त्तते राष्ट्रवन्दने सम्मानः।।[12]

अर्थात् माता के चरणों में शक्ति और पिता के चरणों में सन्मार्ग है अथवा माँ हमेशा शक्ति वर्धक के रूप में साथ रहती है और पिता रास्ता भटकने पर सही दिशा या मार्ग दिखाता है। गुरू ज्ञान का भण्डार होता है। 'गु' का अर्थ अधंकार और 'रु' का अर्थ 'प्रकाश' है अर्थात् अधंकार (अज्ञान) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले जाना। गुरु ही असत्य से सत्य और तम से ज्योति की ओर ले जाता है, कहा गया है–

''असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय''[13]

विभिन्न राष्ट्रीय पर्वों को मनाना और ध्वजारोहण करना भी हमारा कर्त्तव्य है–

स्वतंत्रतादिवसे गणतन्त्रे राष्ट्रध्वजस्तोलनीयः।

माता भूमिस्तत्पुत्रोऽहं मन्त्रोऽयं नित्यं गेयः।।

दशमुखवधः स्वतन्त्रतादिवसः भूसुताप्तिजनतंत्रदिनम्।

एकं दशपापहरं कथितं चान्यं दीपावलीदिनम्।।[14]

15 अगस्त को मनाया जाने वाला स्वतंत्रता का पर्व रावणवध का प्रतीक है, जिसको दशहरा के रूप में आज भी मनाया जाता है और 26 जनवरी अर्थात् गणतंत्रोत्सव सियागमन का प्रतीक होने के कारण दीपोत्सव के रूप में आयोजित किया जाता है। माँ हमारी राष्ट्रभूमि और मैं उसका पुत्र हूँ, इसका वर्णन वेदों के सूक्तों में भी प्राप्त होता हैं–

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।[15]

भारतवर्ष की महत्ता का वर्णन करते हुए कवि ने कहा है कि मेरा भारत धन–धान्यादि सर्व गुणों से सम्पन्न है, और इसी भारत के अन्न और जल के सेवन से ही हम आज जीवित है। इसी भारत माँ की गोद में हमने जन्म लिया, लालन–पालन हुआ और हम इतने बड़े हुए, यह हमेशा स्मरण रखना चाहिए। शास्त्रों में स्वाध्याय के द्वारा निपुणता प्राप्त करनी चाहिए और हमेशा स्वावलम्बी बनने का प्रयत्न करना चाहिए। एक सदाचारी व्यक्ति के धैर्य, क्षमा, दम आदि मानवोचित गुणों का वर्णन भी द्विवेदी जी ने किया है–

धैर्यं क्षमादमोऽस्तेयं शुचिताचेन्द्रियनिग्रहता।

प्रज्ञाविद्यासत्यमक्रोधो लसेज्जीवने सज्जनता।।

गुणवत्वं च पराक्रमत्वं धर्मज्ञत्वं कृतज्ञता।

आत्मज्ञत्वं दिव्यशीलता दृढ़ भवेत्ते समर्थता।।[16]

हमें क्रोध का त्याग कर धैर्य, क्षमा, दम, अचोरिता, शुचिता, इन्द्रियनिग्रहता, प्रज्ञा और विद्या को अपनाकर सज्जन बनने का प्रयास करना चाहिए। इसी प्रकार के गुणों का वर्णन मनुस्मृति में भी वर्णित हैं–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।[17]

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्माचर्यापरिग्रहाः यमाः। (योगदर्शन 2.30)[18]

गुरू वाल्मीकिरचित रामायण का नित्य पाठ करना चाहिए और उससे राम के व्यवहार का अनुकरण करना चाहिए। रामायण का अध्ययन इस प्रकार करना चाहिए कि उसके त्याग, तपस्या और तपोवनों की पावन संस्कृति में मन रम जाये और उससे हम ऐसे सर्वोत्तम गुणों को आत्मसात करें।

बालोपदेश के अन्त में कवि ने सद्भाव की श्रेष्ठता पर बल दिया है–

चारित्रं सर्वस्य हितत्वं विद्वता च विनम्रता।
मातृभूमिराष्ट्रस्य रक्षणे त्वद्भावना भवेन्महिता।।[19]

एक सच्चरित्र पुरुष बनकर सबके साथ विनम्रता का भाव रखना चाहिए और अपनी मातृभूमि के प्रति हमेशा सद्भाव रखना चाहिए।

इस प्रकार वाल्मीकिरामीयं में वर्णित बालोपदेश की भाषा अत्यन्त सरल व सहज है तथा सीधे हृदय को स्पर्श करने वाली है। त्याग, तपस्या, धैर्य, क्षमा, अस्तेय आदि गुणों का समावेश एक सत्पुरुष में अवश्य होना चाहिए। एक उत्तम बालक के गुणों का वर्णन कवि ने बालोपदेश में किया है। भारतवर्ष के प्रति कर्तव्य और दायित्व निर्वहन की शिक्षा सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत है। सदाचार, नैतिकता और राष्ट्रवादी चेतना का संचार तथा स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा सदा अनुकरणीय है। कुशलव द्वारा दिया गया बालोपदेश जनमानस को हृदयासिक्त और मन को अतिरंजित करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाल्मीकिरामीयं 4/3
2. वही, 4/4
3. तैत्तिरीयोपनिषद् 1/11/12
4. वाल्मीकिरामीयं 4/5
5. वही, 4/6
6. वही, 4/7

7. वही, 4/8

8. वही, 4/10

9. वही, 4/9

10. वही, 4/11

11. वही, 4/12

12. वही, 4/13

13. वृहदारण्कोपनिषद् 4/7/735

14. वाल्मीकिरामीयं 4/14–15

15. पृथ्वीसूक्त 12/1/10

16. वाल्मीकिरामीयं 4/19–20

17. मनुस्मृति 6.12

18. योगदर्शन 2.30

19. वाल्मीकिरामीयं 4/21